मिशन शिक्षण संवाद

अंतर्कथाएँ

काव्य मंजरी
शैक्षिक कविताओं का संकलन

संकलन
काव्यांजलि टीम
मिशन शिक्षण संवाद

Scanned with CamScanner

मिशन शिक्षण संवाद

अंतर्कथाएँ - गणिका 01

एक थी गणिका जिसने जीवन भर पाप किया।
सारा जीवन गया भोग में ईश्वर का नाम ना लिया।।
हुई वृद्ध और बीमार चला गया जीवन बसंत।
स्वभाव उसका जाने बिना घर आए कई संत।।

गिरकर चरणों में उनके बोली मेरा उद्धार करो।
ना होऊं शर्मिंदा दूसरी दुनियां में ऐसा उपकार करो।।
बोले संत तोते को देकर राम नाम सिखाओ।
पाकर मुक्ति फिर तुम दूसरी दुनियां में जाओ।।

राम नाम लगी सिखाने वह तोते को दिन रात।
रोम- रोम से उसके भी कट गए सब पाप।।
अब गणिका और तोता रटने लगे राम- राम।
तर गई वो भव सागर को बन गई संत महान।।

चंद्रशेखर चंद्रा प्र. अ.
प्रा. वि. जाफराबाद हाथरस
के. आर.पी. मुसरान,हाथरस

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद शिक्षक का सम्मान।

Scanned with CamScanner

मिशन शिक्षण संवाद

अंतर्कथाएँ - गजेन्द्र मोक्ष 02

कालचक्र के अंतर्गत बनी थी एक कहानी,
गजराज की रक्षा हेतु स्वयं आए विष्णु अंतर्यामी।

पूर्व जन्म के जय और विजय
शापित हो धरती पर आए,
गज और ग्रह के रूप में
नाम उन्होंने यह पाए।
गंडक नदी के तट पर जल
पीने जैसे ही गज उतरा था,
वैसे ही भयानक ग्राह ने
उसका पग जकड़ा था।
फिर दोनों में प्रारम्भ एक युद्ध हुआ था,
तब गज प्राणों की रक्षा हेतु प्रभु से अर्ज किया था।

गज की अरज सुन धरती पर
आए विष्णु स्वामी,
अपने सुदर्शन से गज को
ग्राह से किया मुक्त यह जानी।

रचना- गरिमा वार्ष्णेय (स.अ.)
प्रा. विद्यालय कलवारी
हाथरस , हाथरस

Scanned with CamScanner

मिशन शिक्षण संवाद

अंतर्कथाएँ - अजामिल 03

शास्त्रज्ञ, शीलवान और सदाचारी।
विष्णुभक्त अजामिल पुत्र आज्ञाकारी।।
युवावस्था में उसके साथ घटी एक घटना।
स्त्री के प्रेम में फंस प्रभु को भूला जपना।।

पिता ने जो फूल मंगाए वहीं पर फेंक दिए।
घर पर वापस आया अजामिल स्त्री को लिए।।
नारी रूप पर आसक्त उसे पिता ने समझाया।
पिता को धक्के मार बाहर का रास्ता दिखाया।।

उस स्त्री से दस पुत्र हुए मन में हरषाया।
दसवीं संतान का नारायण था नाम धराया।।
जीवन भर बुरे कर्म किए अंत में मृत्यु आई।
श्री हरि नारायण जपते जपते मुक्ति पाई।।

मन्जू शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० - नगला जगराम
सादाबाद - हाथरस

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

Scanned with CamScanner

मिशन शिक्षण संवाद

अंतर्कथाएँ - शबरी 04

एक थी माता शबरी, जो बागों के बीच थी ठहरी ।
प्रभु मिलन की चाह में, वो बैठी थी वन की राह में ।
बेबस थी प्रभु के प्यार में, हर पल रहती इंतजार में ।
कहती थी राम का मुझसे वादा है, मजबूत मेरा इरादा है ।

एक दिन प्रभु आएंगे, मेरी कुटिया में बैठकर जाएंगे ।
जब दर्शन उनके पाऊंगी, सातों जन्म धन्य हो जाऊंगी ।
प्रभु दर्शन के सपने लिए अंतर्मन में, वो थी इसी उधेड़बुन में ।
प्रभु मिलन की बेला आई, वह बगिया से बेर चुन-चुन लाई।

हर एक बेर को उसने चखा, खट्टे को फेंक मीठे को रखा।
प्रभु राम बिल्कुल ना शर्माए थे, शबरी के झूठे बेर ही खाए थे ।
जब राम के दर्शन पाई थी, शर्माई थी, इठलाई थी।
हर्षाई थी, मन ही मन वो मुस्कायी थी।

जय प्रकाश जय (स०अ०)
प्रा०विद्यालय -जनमासी
सासनी , हाथरस

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद शिक्षक का सम्मान।

Scanned with CamScanner

मिशन शिक्षण संवाद

अंतर्कथाएँ – सती अहिल्या | 05

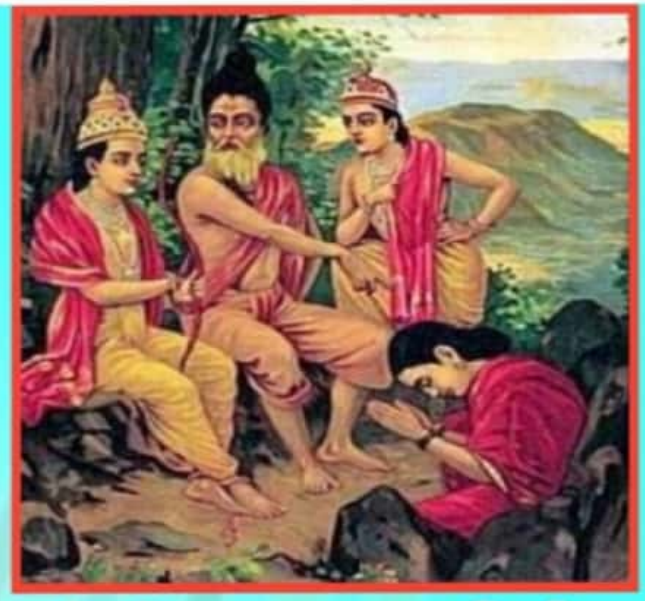

सौंदर्य रूप देख मन हर्षावे,
ज्ञान गुणों में निराली थी।
पवित्र प्रेम को लगी नजर,
ये नजर इंद्र की काली थी।।

ऋषि वेषधर पास गया वो,
चाल समझ ना पाई थी।
पति प्रेम में पूर्ण समर्पित,
सती अहिल्या नारी थी ।।

जब उसको भान हुआ तब,
बहुत देर बिता ली थी।
सजा मिली अहिल्या को,
वो बिल्कुल भोली-भाली थी ।।

रो-रो कर अहिल्या फिर बोली,
मैं अबला अनजानी थी।
आप शक्ति से पूर्ण थे फिर
मुझे बचाने की क्यों न ठानी थी।।

पत्नी की सुन बात ऋषि ने,
गलती अपनी मानी थी।
बन पत्थर की शिला,
आश्रम में जगह बना ली थी।।

प्रभु राम के चरणों के स्पर्श
को पाकर,सुंदर रूप पाली थी।
पति प्रेम में पूर्ण समर्पित,
सती अहिल्या नारी थी ।

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

रचना- नीलम सिंह (स.अ.)
पू.मा.वि. रतनगढ़ी
जनपद- हाथरस

Scanned with CamScanner

मिशन शिक्षण संवाद

अंतर्कथाएँ – राजा अम्बरीष 06

इक्ष्वाकु वंश नाभाग के पुत्र,भागीरथ के पुत्र थे अंबरीष ।
जिन पर कृपा श्रीकृष्ण की,जग पालक जगदीश ।।

श्रीकृष्ण को चाहने किया एकादशी व्रत।
ऋषि दुर्वासा पहुंच गए,तभी उसी वक्त ।
राजा के निवेदन को, ऋषि दुर्वासा ने स्वीकार किया ।
ऋषि दुर्वासा के आने से पहले,राजा ने चरणोदक पान किया।

ऋषि दुर्वासा ने समझा,
ये तो मेरा अपमान हुआ।
दंड के लिए कृत्या को भेजा,
राजा को तनिक भय न हुआ।।
चक्र देख दुर्वासा भागे,
दसों दिशाओं में दौड़े ।
शंकर, ब्रह्मा तक दौड़े,
लेकिन चक्र सुदर्शन
पीछा ना छोड़े।।

रचना- पतिराम सिंह (इ.प्र.अ.)
पू.मा.वि.रतनगढ़ी
जनपद- हाथरस

Scanned with CamScanner

मिशन शिक्षण संवाद

अंतर्कथाएँ - सहस्त्रबाहु 07

चंद्र वंश के कृत्यवीर्य ,
पद्मिनी के पुत्र थे एकवीर।
हैहय वंश के श्रेष्ठ, राजा थे परमवीर।।
अनंत कोटि ब्रम्हांड नायक,
राजाधिराज योगीराज।
परम ब्रम्ह श्री सच्चिदानंद सद्गुरु,
सहस्त्रार्जुन महाराज।।

अगहन माह की शुक्ल सप्तमी,
को होती जय जयकार।
तीन दिनों तक चलता रहता,
दीन दुखियों का भंडार।।
क्षत्रिय धर्म की रक्षा करने,
उन्होंने अवतार लिया।
राजेश्वर मंदिर में उनकी,
कीर्ति में जलता दिया।।

जो प्राणी सुबह में सहस्त्रबाहु
अर्जुन का स्मरण करता है।
उस प्राणी की दीन दशा का,
पल में हरण होता है।।
सहस्त्रबाहु अर्जुन जी की कृपा ,
हम सब पर यूं ही बनी रहे।
भारत देश को ऐसे परम
योद्धाओं पर नाज रहे।।

अतुल गौतम (स. अ.)
प्रा. वि. नगला नाई
ब्लॉक -सासनी
जनपद -हाथरस

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद शिक्षक का सम्मान।

Scanned with CamScanner

【रचनाकारों की सूची】

1- चन्द्र शेखर चन्द्रा, हाथरस
2- गरिमा वार्ष्णेय, हाथरस
3- मंजू शर्मा, हाथरस
4- जय प्रकाश जय, हाथरस
5 - नीलम सिंह, हाथरस
6- पतिराम सिंह, हाथरस
7- अतुल गौतम, हाथरस

टेक्निकल टीम
आर.के.शर्मा, चित्रकूट
आयुषी अग्रवाल,मुरादाबाद
अर्चना अरोरा, फ़तेहपुर
आकांक्षा मिश्रा, हरदोई
प्रतिमा उमराव, फ़तेहपुर
शहनाज बानो, चित्रकूट
हेमलता गुप्ता, अलीगढ़

संकलन
काव्यांजलि टीम
मिशन शिक्षण संवाद

Scanned with CamScanner